(हिदायत बुतपरस्तिये जैन.)

(जिसकों,)

जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजीने मुरतिब किया.

इसमे मुनि कुंदनमलजीके लेखका जवाब और मूर्त्तिपूजाके बारेमें उमदा दलिले दर्ज है.

(शुरुआत किताब.)

[शेयर.]

रौनके महताबभी देखो, गर्मीये आफताबभी देखो;
शैर हासिलहै मुफ्त घरबैठे, लो! हमारी किताबभी देखो. १

जैनमजहबमें जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिका मानना कदीमसे चला आया, भरतराजाने तीर्थअष्टापदपर चौईसतीर्थकरोके मंदिर तामीर करवाये, और जमाने तीर्थंकर महावीरस्वामीके गौतमगणधर ऊनकी जियारतकों गये, अमर जैनमजहबमें मंदिरमूर्त्तिका मानना मना होताती ऐसापाठ क्यौं होता? जब गौतमस्वामी जैसे जैनमुनि जिनको गणधरपदवीथी–तीर्थकी जियारतकों गये तो, दुसरे जैन-मुनि क्यौं न जावे? मूर्त्तिपूजासे एक नागकेतु महाशयकों केवलज्ञान पैदा हुवा, और जिनमूर्त्तिके दर्शनसे आर्द्रकुमारको जाति-स्मर्ण ज्ञान हुवा. तीर्थ शंखेश्वरपार्श्वनाथ, तीर्थ केशरीयाजी और तीर्थ अंतरिक्षजीमें निहायत पुरानी जैनमूर्त्ति मौजूद है, अगर जैन

मजहबमें मूर्त्तिका मानना कदीमसे न होतातो ये पुरानी मूर्त्तियें क्यौं होती? और पुराने जैनतीर्थभी क्यौं होते?

बाद निर्वाण तीर्थंकर महावीरस्वामीके (२९०) वर्स पीछे एक संप्रतिराजा जैनमजहबमें कामीलएतकात हुवा, जिसके तामीर करवाये हुवे जैनमंदिर हिंदमें कइजगह अबतक मौजूद है, तीर्थ-शत्रुंजय, गिरनारपर इसीराजासंप्रतिके बनाये हुवे पुराने जैनमंदिर अबतक खडे है, आबुके जैनमंदिर मुल्कोमें मशहूर है, शेठ विमल-शाह, दिवान वस्तुपाल, तेजपाल और शेठ भेसाशाहके बनवाये हुवे जैनमंदिर आबुपहाडपर क्याही! ऊमदा कारिगिरीके नमुने खडे है, जिसका बयान लिखना कलमसे बहार है, बडे बडे शिल्प-कार इनमंदिरोकों देखकर ताज्जुब करते है, राजाकुमारपालका बनाया हुवा जैनमंदिर तीर्थतारंगापर किसकदर मजबूत और पावंद बना है जिसकी तारीफ बेमीशाल है. जैनागमज्ञातासूत्रमें सतरांहतरहकी पूजाका बयान है, खयाल करो कि अगर जैन-मजहबमें मूर्त्तिपूजा न होतीतो अैसा बयान क्यौं होता? जैसे हर्फोंकों देखकर ज्ञान पैदा होता है, मूर्त्तिको देखकरभी ज्ञान होता है. जिसने पुस्तककी इज्जत किइ ऊसने मूर्त्तिकीभी इज्जत किइ समजो, चाहे वो मूर्त्तिपूजासें अेतराज करे मगर ऊसके दिलसे मूर्त्तिकी इज्जत साबीत होचुकी.

इसकिताबके बनानेका सबब यह हुवा कि जब मेने संवत् (१९७१) का चौमासा बमुकाम शहरधुलिया, जिले खानदेशमें किया, मुकाम वरोरा, जिले चांदासे भेजा हुवा एक "मिथ्या-भर्मनास्ति" नामका इस्तिहार बजरीये डाकके मुजको मिला, इसके लेखक मुनि कुंदनमलजी है और प्रसिद्धकर्त्ता जौनी गट्टुलाला कस्तुरचंदजी खानदेश है. इसमें मेरी बनाइ हुइ किताब सनम पर-स्तिये जैनपर कुछ विवेचन दिया है. इसमे न किसीसूत्रका पाठ

दिया न किसीसूत्रका हवाला दिया, सिर्फ ! थोडासा लिखाण लिखकर चैत्यशब्दके बारेमें कुछ पुछा है.

विवेचनपत्रकी शुरूआतमें मुनि कुंदनमलजी लिखते है कि– देखिये ! पितांबरी मूर्त्तिपूजक शांतिविजयजीको हमारे स्वधर्मी सुश्रावक बंब खूबचंदजी साकीन ऊन्हेल–मुल्क मालवेवालेने जैन-पत्र तारिख २९–५–११ के अंकद्वारा (२२) सवाल पुछेथे; और उत्तर जैनसिद्धांतोंके मूलपाठसें मागेथे, ऊक्त प्रश्नोके जवाबमें शांतिविजयजीने सनम परस्तिये जैन–इस नामकी किताब छापके जाहीर किइ है.

(जवाब.) बेशक ! किताब सनम परस्तियेजैन मेरी तर्फसें बनाइ गइ है, जोकि जैनश्वेतांबरश्रावक धुलजी गणेश–साकीन महेंदपुर मुल्क मालवेने फायदेआमके छपवाकर जाहिर किइ है, इसमें मेने जो बाइससवालोके जवाब दिये है, कइजगह जैनसिद्धांतोके मूलपाठभी दिये है, जिनको शकहो मजकुर किताब मंगवाकर देखे, जैनसिद्धांतोके मूलपाठही मानना या बतीससूत्रही मानना ऐसा किसी जैनसिद्धांतमें नही लिखा, अगर लिखा है तो कोई पाठ बतलावे, मेरेसे कोई महाशय जैनसिद्धांतोके मूलपाठ लेना चाहे, तो वे अपने लेखमे मूलसूत्रके पाठदेकर पेंश आवे, आप पाठ देना नही, और दुसरोसें पाठ मांगना, यह कौन इन्साफ है ? जैनसिद्धांतोमें सूत्र, भाष्य, टीका, निर्युक्ति और चूर्णि ये पंचांगी मंजुर रखना फरमाया, मूलसूत्रोपर जो बालावबोध यानी टबा बना है, टीकाके आधारसे बना है, टीकाकों मंजुर नही रखना फिर टबाकों मंजुर क्यौं रखना ? कइजगह मूलसूत्रमें जो बात नही है और टबेमे है, बतलाइये ! वे बाते कहांसे लाइ गई ? अगर कहा जाय टीकासे लाइ गई है, तो फिर टीकाकों मंजुर क्यौं न किई जाय ? नंदीसूत्रमे पेंतालीस जैनागमके नाम लिखे है, और एवमादि

शब्दसे (१४०००) प्रकीर्णकशास्त्र मंजुर रखना लिखा है, अगर बतीससूत्रका मूलपाठही मंजुर रखा जाय तो बतलाइये! महावीरस्वामीके सताईसभव किस सूत्रके मूलपाठमें लिखे है? महावीर स्वामीके शाथ गौतमस्वामीका धर्मचर्चाके बारेमे वाद हुवा कहां लिखा है? ब्रह्मदत्तचक्रवर्तीकी कथा, ढंढणरिषिका अधिकार, अरिहंतोके बारांगुण, आठ दिनके पर्यूषण, तीर्थंकरमहावीरस्वामीकी जन्मराशिपर भस्मग्रह आया, चंद्रगुप्तराजाने सोलहस्वप्न देखे और सीमंधरस्वामीवगेरा वीशवहेरमानका अधिकार ये बातें बत्तीससूत्रके मूलपाठमें किसजगह लिखी है कोई बतलावे.

अब पीतांबरीके बारेमें जवाब सुनिये! जैनागम निशीथसूत्रमें लिखा है कि–जैनमुनिकों अगर नयाकपडा मीले तो तीन पसली जितना रंग देना, पीलेकपडे पहननेवालेकों कोई पीतांबरी कहे तो इससे क्या हुवा? पीलेकपडे पहनना जैनमुनिकों खिलाफ जैनशास्त्रके नही, अलबते! जैनमुनिकों मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा–अगर लिखा है, तो कोई पाठ बतलावे, अगर कोई इससवालकों पेंश करे कि–मूर्त्तिपूजा अछी चीज है, तो जैनमुनि खुद क्यौं नही करते, जवाबमे मालुम हो वंदन नमनस्तवनरूप भावपूजा जैनमुनि भी करते है, पेस्तर लिखचुकाहुं कि–गणधर गौतमस्वामी–तीर्थ अष्टापदकी जियारतकों गयेथे, साबीत हुवा वंदन नमनरूप भावपूजा जैनमुनि भी करते है.

आगे मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें बयान करते है कि–ऊक्त किताबमें कितनेक जैनके असली सिद्धांतोके मूलपाठ दाखल किये है, वह सर्व पाठ अधुरे दाखल किये है, संपूर्ण पाठ शांतिविजयजीने दाखल नही किये है, सौचो! अधुरी बात अकलमंद हुशियार आदमी कोई वजहसे अंगीकार नही करते है.

(जवाब.) अगर शांतिविजयजीने अधुरे पाठ दाखल कियेथे

तो आपने पुरे पाठ दाखल करके क्यौं नही बतलाये ? आपका फर्जथा पुरे पाठ दाखल करके बतलाते, याते बांचनेवालोकों मालुम होजाता कि यह अधुरा पाठ है, और यह पुरा है.

फिर मुनिकुंदनमलजीने अपने विवेचन पत्रमें तेहरीर किया है, जैसा स्थान होवे वैसा शब्दका अर्थ कियाजाता है, मसलन ! चरण–भूषण यहांपर मुकुट, ताज, पघडी, फेटा, टोपी वगैरा अर्थ कदापि नही होसकते, कर–कंकण यहांपे बुट, जुते, पगरखी, चपल, खडाऊ अैसे अर्थ कदापि नही होसकते, इसी वजह चैत्य शब्दके श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोमें अनेक अर्थ किये है.

(जवाब.) अगर चैत्य शब्दके अनेक अर्थ किये है तो उनमेसे एक दो अर्थ जरुर कर बतलानाथा, चैत्य शब्दके माइने जिनमंदिर और जिनमूर्त्ति है, इसमें कोई शक नही, मेने चरणभूषणकी जगह मुकुटताज और करकंकणकी जगह बुट, पगरखी वगेरा अयोग्य अर्थ नही किये, योग्य किये है; अगर किसीजगह अयोग्य अर्थ किये हो, तो बतलाइये.

आगे मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें इस मजमूनको पेंश करते है कि तीर्थंकरोके वचनोको शांतिविजयजी धक्का पहुचा-के अपनी मतरूढसे एकपक्ष पकडके चैत्य इस शब्दका प्रतिमा एसा एक अर्थ करके अपना मत सिद्ध करना चाहते है, मगर श्री जैनके प्राचीन असली सिद्धांतोके बखिलाफबात अकलमंद हुशियार आदमी कोई वजहसे अंगीकार नही करते है, देखो ! चैत्य शब्दकी पुष्टिके बारेमें शांतिविजयजीने हैमकोशका दाखला दिया है, मगर हैमकोशका कर्त्ता मूर्त्तिपूजक है, इसलिये यह साक्षी मंजुर कदापि नही होसकती.

(जवाब.) अगर हैमकोशके कर्त्ता मूर्त्तिपूजक होनेसे उनकी साक्षी मंजुर नही, तो मूर्त्तिनिषेधक जैनाचार्यकी साक्षी दिजिये,

जिनोने जैनकोश बनाया हो. मूर्त्तिपूजक जैनाचार्यकी साक्षी मंजुर नही, मूर्त्तिनिषेधक जैनाचार्यकी साक्षी दिइ नही, फिर जवाब क्या हुवा ? शांतिविजयजीने सनमपरस्तिये जैनमें ऐसा कोई लिखाण नही किया जिससे तीर्थंकरोके फरमानको धक्का पहुचे, अगर ऐसा कोई लिखाण था तो बतलाना था, एकांतपक्ष भी नही पकडा, बल्कि ! चैत्य शब्दका माइना जिनमंदिर और जिनप्रतिमा है, ऐसा जैनशास्त्रोके पाठसे बतला दिया है, अगर कोई कहे कि चैत्यशब्दका माइना ज्ञान या साधु है तो उसका सबुत बतलावे, जैनागममें साधुकी जगह निग्गंथाण वा निग्गंथीणवा साहुवा साहुणीवा भिखुवा भिखुणीवा ऐसा पाठ लिखा है, मगर चैत्यं वा चैत्यानि वा एसा पाठ नही लिखा, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके चौराशी हजार साधुथे ऐसा लिखा मगर चौराशी हजार चैत्यथे ऐसा नही लिखा, इसीतरह तीर्थंकर महावीर स्वामीके चौदह हजार साधु कहे, मगर चौदह हजार चैत्यथे ऐसा नही कहा, अगर चैत्यशब्दका माइना ज्ञान है ऐसा कहे तो नंदीसूत्रमें ज्ञानकी जगह चैत्यशब्द क्यौं नही कहा ? नंदीसूत्रमे नाणं पंचविहं पन्नतं, ऐसा पाठ कहा, मगर चेइयं पंचविहं पन्नत्तं ऐसा पाठ नही कहा, जहांजहां ज्ञानी मुनियोका लेख आता है मइनाणी सुयनाणी ओहिनाणी मणपज्जवनाणी केवलनाणी ऐसा पाठ है, मगर किसीजगह मतिचैत्यी श्रुतचैत्यी अवधिचैत्यी ऐसा पाठ नही आता, जैनशास्त्रोमें कइ जगह बयान है अमुक जैनमुनिकों अवधि ज्ञान पैदा हुवा, अमुक जैनमुनिकों केवलज्ञान पैदा हुवा, मगर ऐसा पाठ नही आता कि-अवधिचैत्य या केवलचैत्य पैदा हुवा, इसलिये कहाजाता है चैत्यशब्दका माइना ज्ञान नही.

[भगवतीसूत्रमें पाठ है.]

किं निस्साएणं भंते असुरकुमारा देवा उढं उपायंति,

जाव सोहम्मोकप्पो गोयमा! असुरकुमारा देवा इत्यादि नणथ्थ अरिहंतेवा अरिहंत चेइयाणिवा अणगारे भावि-अप्पणो निस्साए उढं उप्पयंति जावसोहम्मो कप्पो.

तीर्थंकर महावीरस्वामीसे गौतमगणधरने सवाल किया कि-असुरकुमारदेवता आस्मानमें जावे तो कहांतक जावे? जवाबमें तीर्थंकर महावीरस्वामीने फरमाया कि असुरकुमारदेवता आस्मानमें सौधर्म देवलोकतक जावे, और जाते वख्त अरिहंतका सरणा लेकर जासकता है, अरिहंतकी प्रतिमाका या भावितआत्मा अणगारका सरणा लेकर जासकता है, देखिये! यहां चैत्यशब्दका माईना अरिहंतकी प्रतिमा है या नही? साबीत हुवा चैत्यशब्दका माईना जिनप्रतिमा है.

फिर मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें लिखते है-जैसे घरके घोडे घरके चौकमें कुदाये तो इसमें क्या बडी बात करी, हम शांतिविजयजीकी बहादुरी जब समजते कि-जैसी चैत्यशब्दके बारेमें हैमकोशकी साक्षी दिइ वैसे चैत्यशब्दके बारेमें श्रीजैनके प्राचीन असली सिद्धांतोकी साक्षी देते.

(जवाब.) शांतिविजयजीने जैनके प्राचीन और असली-सिद्धांत भगवतीसूत्रके मूलपाठकी साक्षी ऊपर देदिइ, ऊसमे देखलो! चैत्यशब्दका माईना जिनप्रतिमा है या नही? किताब सनम परस्तिये जैनमेंभी जंघाचारणमुनिके बयानमें भगवतीसूत्रका पाठ देकर चैत्यशब्दका माईना जिनप्रतिमा बतलाचुका हुं, शांति-विजयजीने घरके घोडे घरम नही कुदाये है. बल्कि! किताब सनम परस्तिये जैन बनाकर छपवा दिइ है, जिसकों आज करीब चार वर्स होगये, और छपवानेवालोने शहर बशहर भेज दिइ है, पढनेवालोने पढी होगी.

आगे मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें बयान करते है, शयंभवसूरिका बनाया हुवा दशवैकालिकसूत्र और शामाचार्यका बनाया हुवा पंनवणासूत्र क्यौं मंजुर रखा गया ? यहांपे सहज सवाल पैदा होनेका वख्त है कि—अगर ऊक्त दोनो सूत्रोंके नाम श्रीजैनके प्राचीन असली सिद्धांतोमें दर्ज होवेगे तो शांतिविजयजीका कथन साफ खोटा है ऐसा निश्चय होगा.

(जवाब.) शांतिविजयजीका कथन खोटा जब ठहरसकता है कि—अगर मुनि कुंदनमलजी दशवैकालिकसूत्रको और प्रज्ञापनासूत्रकों गणधररचित साबीत करदेवे, आचार्योंके बनाये हुवे दशवैकालिक और प्रज्ञापनासूत्रको मंजुर रखते हो तो फिर आचार्योंकी बनाइ हुई टीका, भाष्य, निर्युक्ति और चूर्णि क्यौं नहीं मंजुर रखना ? इसका कोई जवाब देवे, अगर कहाजाय नंदीसूत्रमें दशवैकालिक और प्रज्ञापनासूत्रके नाम लिखे है इसलिये हम मानते है, तो जवाबमें मालुम हो, नंदीसूत्रमें पेतालिसआगम वगेराके नाम भी लिखे है ऊनकोभी मानना चाहिये.

फिर मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें तेहरीर करते है, इसके अलावा शांतिविजयजी निर्युक्ति माननेके वास्ते कोशीश करते है, मगर निर्युक्तिमें जो जो अधिकार सावद्याचार्योंने दर्ज किये है वह सर्व अधिकार श्रीजैनके एकादशांगादि ताडपत्रोंके लिखित प्राचीन असली सिद्धांत अंगीकार करेंगे, वह निर्युक्ति माननेमें आवेगी.

(जवाब.) ताडपत्रपर लिखित जैनके एकादशांगादि प्राचीन सिद्धांत मंगवाकर देख लिजिये, ऊनमें निर्युक्तिका मानना लिखा है या नही ? ताडपत्रपर लिखित जैनके प्राचीन सिद्धांतके बारेमें हकीकत सुनिये ! तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद (९८०) वर्स पीछे जमाने देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणके वल्लभी नगरीमें ताडपत्रोपर

जैनपुस्तक लिखे गये, इतनेवर्सके लिखित जैनपुस्तक अगर आपलोगोंके पास हो तो उनमे देखलिजिये, दुसरी दलील यह है कि जिस जिस प्राचीन और असली सिद्धांतमें निर्युक्तिका मानना मना किया हो, उसउस जैनसिद्धांतके नाम जाहिर कीजिये, तीसरी दलील यह है कि जिसजिस निर्युक्तिमें सावद्याचार्योंने अपनी तर्फसे अधिकार नही दर्जकिये हो ऐसी निर्युक्ति कौनसी है बतलाइये याते उसपर अमल कियाजाय.

आगे मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें इस मजमूनको पेश करते है कि—निर्युक्ति मंजुर करनेके बारेमें शांतिविजयजीने भगवतीसूत्र, अनुयोगद्वारसूत्र, समवायांगजीसूत्र, नंदीजीसूत्र, यह चारो सूत्रोंके जो उक्त किताबमें पाठ दाखल किये है, वह सर्व पाठ मूर्त्तिपूजकोंके आचार्योंने अपने बनाये हुवे ग्रंथोको पूर्ण सहायताके वास्ते श्री जैनके असली सिद्धांतोमें नवीन बनाकर दाखल किये है, ऐसा निश्चय होगा, फिर निर्युक्ति, निर्युक्तिके कर्त्ता और निर्युक्तिकी साक्षी देनेवाला सर्व खोटे ठहरेगें.

(जवाब.) निर्युक्ति—निर्युक्तिके बनानेवाले और निर्युक्तिकी साक्षी देनेवाले खोटे जब ठहर सकते है अगर कोई जैनकी द्वादशांगवानीके पुस्तकोसे निर्युक्तिकों गलत साबीत करदेवे, निर्युक्ति बनानेवाले चौदह पूर्वधारी जैनाचार्य भद्रबाहुस्वामी तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (१७०) वर्स पीछे मौजूद थे, जिनको आज (२२७०) वर्स हुवे, चौदह पूर्वधारीके वचन प्रमाणीक होते है इससे साबीत हुवा—निर्युक्ति और निर्युक्ति बनानेवाले अप्रमाणिक नही, निर्युक्तिकी साक्षी देनेवाले भी अप्रमाणिक इसलिये नही कि—जैनके एकादशादि अंगशास्त्र भगवती और समवायांग वगेरा सूत्रोमें निर्युक्तिका मानना मंजुर रखा है. मूर्त्तिपूजक जैनाचार्योंने अगर नवीनपाठ बनाकर दाखल किये है तो ऐसे प्राचीन सूत्र-

सिद्धांत निकालो कि–जो देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणके वख्तके लिखे हुवे हो और ऊसमें देखो कि–निर्युक्तिका मानना लिखा है या नही ? अगर लिखा है तो निर्युक्तिकी साक्षी देनेवाले भी अप्रमाणीक नही ठहर सकते.

फिर मुनि कुंदनमलजी अपने विवेचनपत्रमें लिखते है कि–अतएव शांतिविजयजीने निर्युक्तिके सर्व अधिकार श्रीजैनके एकादशांगादि ताडपत्रपर लिखित प्राचीन असली सिद्धांतोंसें रजुआमसभामें करके दिखलाना चाहिये.

(जवाब.) शांतिविजयजीने निर्युक्ति माननेके पाठ–किताब सनम परस्तिये जैनमें छपवाकर दिखला दिये है. छपवानेवालोने मजकुर किताब छपवाकर शहर बशहर भेज दिइ है, जिसको आज करीब चारवर्स होगये और पढनेवालोने पढीभी होगी, जिनको शक हो–ताडपत्रपर लिखे हुवे पुराने जैनसिद्धांत हिंदके जिस जिस शहरमें मौजूद हो–मंगवाकर देखे, ताडपत्रपर लिखे हुवे पुराने जैनपुस्तक इस वख्त जेशलमेर, पाटन, अहमदावाद वगेरा शहरोंमें मौजूद है, जिस महाशयको जिस बातका शक हो अपना शक मिटानेकी कोशिश करे, अगर कहा जाय. जेशलमेर, पाटन और अहमदावाद वगेरा शहरोंमें जो ताडपत्रपर लिखे हुवे जैनके प्राचीन पुस्तक होगें वे मूर्त्तिपूजक जैनोके होगें. जवाबमें मालुम हो अगर मूर्त्तिपूजकजैनोके लिखीत प्राचीन जैनपुस्तक मंजुर नही तो मूर्त्तिनिषेधक जैनोके लिखीत प्राचीन जैनपुस्तक देखिये, मगर देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणके वख्तके लिखे हुवे देखना चाहिये; क्योंकि ऊनहीके वख्तमें कंठाग्रज्ञान पुस्तकाकार लिखा गया है.

कइ शिलालेख जमीनसे निकले हुवे ऐसे है, जिसके देखनेसें जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिकी साबीती मिलती है, अगर कहा जाय तीर्थंकर देव मुक्त हुवेबाद अरूपी है, फिर मूर्त्ति क्यौं बनाना ?

जवाबमें मालुम हो—मूर्त्ति ऊस हालतकी है जब वे केवलज्ञानी देह-धारी थे, मूर्त्तिपूजा जैनमें अवलसे है, जो महाशय फरमाते है बारह-वर्षी दुकाल पडाथा. मूर्त्तिपूजा ऊस वख्तसे चली है, यह बात गलत है, अगर कोई इस दलीलकों पेश करे कि—भगवानतो अन-मोल थे, ऊनकी मूर्त्ति थोडे मूल्यमें क्यौं बिकती है ? जवाबमें मालुम हो जिनवानी अनमोल है, फिर जैनपुस्तक थोडे मूल्यमें क्यौं बिकते है ?

अगर कोई सवाल करे मूर्त्ति जड है या चेतन? सूक्ष्म है या बादर ? मूर्त्तिमें गुणस्थान कितने पाइये? जवाबमें मालुम हो, धर्म-शास्त्र जड है या चेतन? सूक्ष्म है या बादर? धर्मशास्त्रमें गुणस्थान कितने पाईये ? किसी जैनमुनिकी फोटोमें ऊतारी हुई तस्वीर हो ऊसमें गुणस्थान कितने कहना? जड कहना या चेतन? सूक्ष्म कहना या बादर? इस बातपर गौर कीजिये. अगर कोई इस दलि-लकों पेंश करे कि—जिनेंद्रोकी मूर्त्तिमें चौतीस अतिशय और पेतीसवाणीके गुण कहां है? जवाबमें मालुम हो कागज, स्याहीके बने हुवे आचारांग वगेरा सूत्रोमें जिनवानीके पेतीसगुण कहां है? अगर कहा जाय ऊसके पढनेसे ज्ञान होता है तो इसीतरह जिनेंद्रोंकी मूर्त्तिकों देखकरभी ज्ञान होता है, स्थानांगसूत्रमें दशतरहके सत्य कहे ऊसमें स्थापनाभी सत्य कही, फिर जिनमूर्त्ति जो जिनेंद्रोंकी स्थापना है, सत्य क्यौं नही ?

ज्ञातासूत्रमें जहां द्रौपदीजीका अध्ययन चला है, ऊसमें द्रौपदीजीकों स्वयंवरमंडपमें जानेकी तयारी हुई ऊस वख्त ऊनोने जिनप्रतिमाकी पूजा किई लिखा है और ऐसाभी पाठ है कि—"जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ." जहां जिनमंदिर था वहां द्रौपदीजी गई, सौचो! ऊसवख्त ऊसमंदिरमें खुद तीर्थंकरदेव तो बेठे नही थे, तीर्थंकरदेवकी मूर्त्ति बेठी थी, ऊसी सबबसे ऊसकों

जिनघर कहा, अगर जैनमजहबमें जिनमंदिरका मानना न होता तो जिनघर ऐसा पाठ क्यौं होता? सबुत हुवा, ऊसमें जिनमूर्त्ति मौजूद थी ऊसी सबबसे जिनघर कहा, देखलिजिये! ज्ञातासूत्रके मूलपाठसे जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिका होना साबीत होचुका, रायपसेणीसूत्रमें लिखा है कि–सुर्याभदेवताने जिनप्रतिमाकी पूजा किई, अगर अविरति समद्रष्टिकी धर्मक्रिया गिनतिमें नही लेते तो अविरति समद्रष्टि देवेंद्रका कहा हुवा पाठ गिनतिमें क्यौं लेते हो? श्रेणिकराजा अविरतिसमद्रष्टि श्रावक थे जिनोने विनाव्रतनियमके तीर्थंकरगोत्र हासिल करलिया, जोकि–एक आलादर्जेकी चीजथी अगर कहा जाय मूर्त्ति कुछ बोलती नही इसलिये ऊसे क्यौं मानना? जवाबमें मालुम हो धर्मपुस्तक भी खुद बोलते नही ऊनकोभी नही मानना चाहिये, अगर कोई कहे मूर्त्ति त्यागी है या भोगी? एकेंद्रिय या पंचेंद्रिय? जवाबमें मालुम हो धर्मशास्त्र त्यागी या भोगी? एकेंद्रिय या पंचेंद्रिय? अगर कोई तेहरीर करे जिनप्रतिमामें गति-जाति इंद्रिय कौनसी? योग ऊपयोग कितने? लेश्या कितनी? जवाबमें मालुम हो आचारांग वगेरा धर्मपुस्तकोमें गतिजातिइंद्रिय योगऊपयोग और लेश्या कितनी? जैसे जैनमूर्त्ति पाषाणकी बनी हुई है, आचारांग वगेरा धर्मपुस्तक कागज-स्याहीके बने हुवे है.

कोई श्रावक किसी जैनमुनिकों अपने शहरमें या गेरमुल्कमें वंदना करने जावे तो ऊसको पुन्य होगा या पाप? अगर कहा जाय पुन्य होगा तो शत्रुंजय गिरनार वगेरा जैनतीर्थके दर्शनकों जानेमें पुन्य क्यौं नही? कोई जैनमुनि अपने शहरमें तशरीफ लावे और श्रावकलोग गुरुभक्तिसे कोस दो कोस सामने जावे तो पुन्य होगा या पाप? अगर कहा जाय पुन्य होगा तो बतलाइये! रास्तेमें जो वायुकाय वगेरा जीवोकी हिंसा हुई ऊसका पाप किसकों लगा? अगर कहा जाय मनःपरिणाम गुरुभक्तिके थे. इसलिये

भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पाप नही, तो यही मिशाल मंदिर मूर्त्तिके लिये क्यौं न समजी जाय?

जैनागम ज्ञातासूत्रमें लिखा है कि–थावच्छापुत्रमुनि और शुकदेवजीमुनि हजार हजार जैनमुनियोके साथ और शैलकराजरिषि पांचशो जैनमुनियोके साथ पुंडरीकपर्वतपर मुक्ति गये, पुंडरीकपर्वतका दुसरा नाम शत्रुंजयतीर्थ है, रायपसेणीसूत्रमें बयान है कि सूर्याभदेवताने तीर्थंकर महावीरस्वामीके सामने बत्तीस तरहका नाटक किया, नाटक करनेमें वायुकायके जीवोकी हिंसा हुई, बतलाइये! ऊस हिंसाका पाप किसकों लगेगा? अगर कहा जाय सूर्याभदेवताका इरादा धर्मका था इसलिये पाप नही तो फिर कोई श्रावक जिनप्रतिमाके सामने ईरादे धर्मके नाटक करे तो ऊसको पाप कैसे लगेगा? तीर्थंकरदेव जबजब विहारकरके एकगांवसे दुसरेगांव जाते थे, ऊसगांव नगरके राजेमहाराजे हाथी, घोडे, डंके निशान, रथ वगेरा जुलुसके सामने आते थे, रास्तेमें वायुकायके जीवोकी हिंसा होती थी, बतलाइये! ऊसका पाप किसको लगता था? अगर कहा जाय ऊनराजे महाराजेकों लगता था तो वें ऐसा क्यौं करते थे? तीर्थंकरदेवोने ऊनको मना क्यौं नही किया? अगर कहा जाय ऊनके मनःपरिणाम धर्मकेथे, इसलिये पाप नही लगता था, तो फिर इसीतरह तीर्थयात्रा वगेरामेंभी पाप नही, यह साबीत हुवा, जैनमुनि दिनमें दोदफे अपने कपडोंकी प्रतिलेखना करते है, इसमें वायुकायके जीवोंकी हिंसा होती है, बतलाइये! इसका पाप किसको लगेगा? पतिक्रमण करते वख्त ऊठना बेठना पडता है, ऊसमेंभी वायुकायके जीवोकी हिंसा होगी, व्याख्यान बाचते वख्त, गौचरी जाते वख्त, और गुरुओकी खिदमतमें वायुकायके जीवोंकी हिंसा होगी, खयाल करनेकी जगह है इसका पाप किसकों समजना? अगर कहा जाय यतनासे ये कार्य किये

जाते है, इसलिये भावहिंसा नही, और विना भावहिंसाके पाप नही, तो यही मिशाल दुसरे धर्मकार्यमें क्यौं नही लाना?

किसी श्रावकने दुसरे श्रावककों अपने घर बुलाकर ऊसके तपका पारना करवाया, रसोइ बनाई, रसोई बनानेमें पानी और अग्निके जीवोकी हिंसा हुई, बतलाइये! ऊसका पाप किसको लगा? अगर कहा जाय रसोइ बनानेमें जो पानी और अग्निके जीवोकी हिंसा हुई ऊतना पाप लगा, और तपस्वीकों जिमानेका पुन्य हुवा. जवाबमें मालुम हो रसोई बनानेमें ईरादा क्या पांच इंद्रियोकी पुष्टिके लिये था जो पाप लगे? अगर कहा जाय ईरादा तो धर्मकी पुष्टिके लिये था तो फिर पाप कैसे लगा? जैनमुनि एक गांवसे दुसरे गांव जावे और रास्तेमें नदी आजाय तो मुताबिक फरमान आचारांगसूत्रके एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा. इसतरह नदी ऊतरे और सामने किनारे जावे; खयाल करनेकी जगह है कि—नदीके पार जानेमें कितने अपकायके जीवोंकी हिंसा होगी? तीर्थंकर गणधरोने नदी ऊतरनेका हुकम क्यौं दिया? अगर कहा जाय जैनमुनि यतनासे नदी ऊतरते है, और बाद ऊसके नदी ऊतरनेका दंड लेते है, जवाबमें मालुम हो इरादे धर्मके जैनमुनियोंको नदी ऊतरनेका हुकम है और हुकममें दंड नही होता, अगर कहा जाय यतनासें देखभालकर जैनमुनि नदी ऊतरते है, जवाबमें मालुम हो त्रसजीवोको यानी हिलतेचलते जीवोकों यतनासें बचायगें मगर पानीके जीवोकों कैसे बचासकेगे? ऊसकी हिंसा तो होगा या नही? अगर कहा जाय मनःपरिणाम हिंसा करनेके नही इसलिये द्रव्यहिंसा हुई—भावहिंसा नही हुई, और विना भावहिंसाके पाप नही, तो फिर यही दलिल मंदिरमूर्त्तिके बारेमें क्यौं नही लाते?

दो शख्श एकरास्तेसे जारहे थे और ऊसवख्त ऊस रास्तेमें

बहुतसे कीडे-मकोडे फिर रहे थे, एकशख्श जीवोको बचानेके इरादेसे देखभालकर चलता था, दुसरा बिनादेखे बेंरहेम होकर चलता था. जीवोको बचानेका इरादा ऊसका नही था, योगानुयोग ऐसा बना कि देखकर चलनेवालेके पांवसे एककीडा दबकर मर-गया, बिना देखे चलनेवालेके पांवसे एकभी कीडा नही मरा, बतलाइये ! पापी कौन ? और पुन्यवान् कौन ? अगर कहा जाय देखकर चलनेवाला पुन्यवान् है, दशवैकालिकसूत्रमें पाठ है कि-

जयं चरे जयं चिठे-जयं आसे जयं सये,
जयं भासंतो भुंजंतो-पावकम्मं न बद्धइ.

यतनासे देखभालकर चलनेवालेको भावहिंसा नही लगती, इसलिये पाप नही, जो शख्श विना देखे बेंरहेम होकर चलता था. चुनाचे ! ऊसके पांवसें कोइंभी जीव नही मरा, तोभी ऊसका ईरादा जीव बचानेका नही था इसलिये ऊसको पाप है, ज्ञातासूत्रमें बयान है कि एक सुबुद्धिनामके दिवानने जित शत्रुराजाकों धर्म-पावंद बनानेके लिये एक मोरीका पानी मंगवाकर ऊसकों कईदफे एक घडेसे दुसरे घडेमें डाला और साफ किया, खूशबूदार चीजोसे लज्जतदार बनाया, इसतरह करनेंसे वायुकाय वगेरा जीवोंकी हिंसा हुई. बतलाइये ! ऊसका पाप सुबुद्धिदिवानकों लगा या किसको ? अगर कहा जाय सुबुद्धिदिवानका ईरादा पापका नही था, धर्मका था, इसलिये पाप नही, तो इसीतरह दुसरे कार्यके लियेभी खयाल करलेना चाहिये. तीर्थंकर मल्लिनाथजीने गृह-स्थापनमें छह राजोको प्रतिबोध देनेके लिये. सुवर्णकी पुतली भीतरसे पोकल बनाइथी, और ऊसमें हमेशां भोजनका एकएक कवल डालतेथे, ऊसमें जो जीव पैदा हुवे और चवे बतलाइये ! ऊसका पाप किसकों लगा ? अगर कहा जाय तीर्थंकर मल्लिनाथ-जीका इरादा पापका नही था, छह राजोकों धर्मपावंद बनानेका

था, इसलिये पाप नही तो इसीतरह मूर्त्तिपूजाके बारेमें भी इरादेपर खयाल किजिये, एक कचे पानीके थालमें एक मखी गिरपडी ऊसकों बचानेके इरादेसें तुर्त एक श्रावकने निकाली, बतलाइये! कचे पानीमे अंगुलि डालनेसें जो पानीके जीवोंकी हिंसा हुई ऊसका पाप किसको लगा? अगर कहा जाय मखी निकालनेवाले श्रावकका इरादा जीव बचानेका था, इसलिये पानीके जीवोकी जो द्रव्यहिंसा हुइ ऊसका पाप नही, क्यौंकि–पाप या पुन्य बांधना मनः परिणामके ताल्लुक है, जब मनः परिणाम अशुभ नही तो पाप कैसे बंधे? इसीतरह मूर्त्तिपूजाके लिये भी मनः परिणाम-पर बात है.

अगर कोई कहे श्राद्धविधि ग्रंथमें लिखा है जिनमंदिरकी धजाकी छाया जिसके घरपर दिनके अवल और अखीरप्रहरमें पडे ऊस घरवालेका अछा नही, जिनमंदिर तो अछा है, फिर ऊसकी धजाकी छाया अछी क्यौं नही? जवाबमें मालुम हो, अछी चीज भी विधिसे सेवन करो तभी फायदेमंद होती है, श्रावकोंका फर्ज है, जिनमंदिरकी आशातनासे बचे, और इसीलिये कुछ फासले पर बसे, नजीक जिनमंदिरके अपना घर होनेपर आशातना होनेका सबब है, बात आशातना मिटानेके लियेथी, इसको दुसरे रास्ते ऊतारना मुनासिब नही.

जैनशास्त्रोमें तीर्थ दो तरहके फरमाये, एक स्थावरतीर्थ दुसरा जंगमतीर्थ, स्थावरतीर्थ, अष्टापद, समेतशिखर, शत्रुंजयगिरनार, चंपापुरी, अयोध्या, पावापुरी वगेरा, और जंगमतीर्थ, साधु-साधवी, श्रावक–श्राविका, जैनागममें दोंनों तरहके तीर्थ मंजुर रखना फरमाये, तीर्थंकर रिषभदेव महाराज अष्टापदपर मुक्त हुवे, बीस तीर्थंकर समेतशिखरपर मुक्त हुवे, तीर्थंकर वासुपूज्य महाराज चंपापुरीमे नेमिनाथ महाराज गिरनार पर्वतपर तीर्थंकर

महावीर स्वामी पावापुरीमें मुक्त हुवे, तीर्थ अष्टापदकी जियारतकों गौतमस्वामी गये. इसीतरह दुसरे जैनमुनि अगर तीर्थंकरोकी निर्वाणभूमिपर जियारतकों जावे तो क्या हर्ज है ? साबीत हुवा जैनशास्त्रोमें जैनतीर्थोंकी जियारत जाना लिखा है.

जीवाभिगमसूत्रमें बयान है कि-भुवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिकदेव ते नंदीश्वरद्वीपके जिनमंदिरोंकी जियारतको जाते है, और जलसा करते है, भगवतीसूत्रमें लिखा है, देवलोकमें जहां सुधर्मासभाके माणवक चैत्यस्तंभोमें जिनोंद्रोकी डाढा रखी हुई है, देवतेलोग ऊनका विनय करते है, देखिये ! यह जडवस्तुकी इज्जत हुई या नही ? मूर्त्तिपूजाकी पुख्तगीकी यहभी एक ऊमदा दलिल है, सूत्रऊपाशकदशांगमें आनंद और कामदेव वगेरा श्रावकोंने जिनप्रतिमाका वंदन नमन करना मंजुर रखा, ज्ञातासूत्रमें द्रौपदीजीने जिनप्रतिमाकी पूजा किइ, और नमुथ्थुणंका पाठ पढकर भावस्तव किया, रायपसेणीसूत्रमें सूर्याभ देवताने और जीवाभिगमसूत्रमें विजयदेवताने जिनप्रतिमाकी पूजा किई लिखा है, अगर जैनमजहबमें मूर्त्तिपूजा कदीमसें न होती तो जैनशास्त्रोंमें ये पाठ क्यौं होता ?

ज्ञातासूत्रमें और अंतगडसूत्रमें कहा है, शत्रुंजय पर्वतपर अमुक जैनमुनि सिद्ध हुवे, मानुष्योत्तर पर्वतपर और नंदीश्वरद्वीपमें जो जैनमंदिर मौजूद है, जंघाचरण जैनमुनि ऊनकी जियारतकों जाते है, साबीत हुवा तीर्थभूमि अछे इरादे पैदा होनेकी जगह है, अगर कहा जाय अढाइद्वीपमें सबजगह सिद्ध हुवे है, फिर तीर्थभूमिकी बात ज्यादा क्या हुई ? जवाबमें मालुम हो ज्यादा बात यह हुई कि-अबभी वहां जैनमंदिर और मोक्षगामी जैनमुनियोके चरण बने हुवे है, इसीलिये कहाजाताहै, तीर्थभूमि ज्यादा धर्मपुख्तगीका सबब है. जैनशास्त्रोमें लिखा है, भरतराजा-चतुर्विधसंघकों लेकर

तीर्थ शत्रुंजयकी जियारतको गयेथे. कई श्रावक जैनमुनिको वंदन करनेके लिये एक शहरसे दुसरे शहर जावे यह गुरुयात्रा हुई. जब गुरुयात्रामें पुन्य है तो देवयात्रामें पुन्य क्यौं नही? देवलोगोके चित्र-नरकावासोके चित्र-जंबूद्वीप वगेराके नकशे. देखकर जैसे ऊन ऊन चीजोका ज्ञान होता है मूर्त्ति देखकर ऊस देवका ज्ञान क्यौं न होगा ?

तीर्थंकरोके समवसरणमें पूर्व दिशाके सामने खुद तीर्थंकरदेव तख्तनशीन होते है, और तीनदिशामें तीर्थंकरदेवकी मूर्त्ति बनाकर देवतेलोग जायेनशीन करते है. सबुत हुवा खास तीर्थंकरोके होते हुवे भी मूर्त्ति मानी जातीथी, खयाल करो ! यह किसकदर मजबूत और पावंद दलिल है कि-जिसपर कोई किसी तरहका ऊज्र नही करसकता. जब तीर्थंकरोकी हयातीमें भी मूर्त्ति मानी जातीथी तो फिर इसके माननेमें कौन जैन इनकार करसकता है? दशवैकालिकसूत्रकी निर्युक्तिमें बयान है. जैनाचार्य शयंभवसूरिने जिनमूर्त्ति देखकर प्रतिबोध पाया. जैनमजहबमें जिनमंदिर मूर्त्ति-जैनपुस्तक साधु-साधवी, श्रावक-श्राविका ये सात धर्मक्षेत्र बयान फरमाये, अगर मंदिरमूर्त्तिका इनकार करे तो पांच धर्मक्षेत्र रहजाते है, और रखना चाहिये सात समजसको तो समज लो ! मंदिरमूर्त्ति जैनमें कदीमसे है या नही ? कई शिलालेख जमीनसे निकले हुवे ऐसे है, जिनोमे जैनमंदीर और जिनमूर्त्तिके लेख मीलते है, सौचो! अगर जैनमजहबमें मूर्त्तिपूजा न होती तो ऊसके लेख क्यौं होते? अगर क्रिया करनेसे मुक्ति होती हो तो जमालिजीने गौतमगणधर जैसी क्रिया किई फिर ऊनकी मुक्ति क्यौं नही हुई ? दरअसल ! विनाश्रद्धाके क्रिया कारआमद नही होती, कइशख्श विना क्रिया किये अकेली श्रद्धापूर्वक भावनासे केवल ज्ञान पाये है, इसीलिये कहा है श्रद्धा वडी दुर्लभ है.

जिनप्रतिमाकी पूजामें अगर आरंभ मानाजाय तो फिर बतलाइये ! जैनमुनिकी दीक्षाके जलसेमें आरंभ क्यौं नही ? अगर कहा जाय दीक्षाके जलसेमें इरादा धर्मका है, इसलिये भावहिंसा नही तो फिर जिनप्रतिमाके जलसेमें रथयात्रामें अष्टान्हिका महोछवमें भी इरादा धर्मका है ऊसमें पाप कैसे लगेगा ? अगर कहा जाय हम भावनिक्षेपा मंजुर रखते है, तो फिर जैनमुनिका वेष देखकर वंदन क्यौं करना ? क्यौंकि ऊनके दिलका भाव कैसा है यह शिवाय अतिशयज्ञानीके दुसरा कौन जानसकता है ? गुरूमहाराजके आसनकों या तख्तको अपना पांव लगजाय तो गुनाह हुवा समजते हो सौचो ! यह एक तरहकी जडवस्तुकी इज्जत हुई या नही ? जड वस्तुकी इज्जत किइ या ऊसकों मंजुररखी बात एकही हुई.

किसी जैनमुनिकों कोई श्रावक एक गांवसे दुसरे गांव वंदना करनेको जावे ऊसवख्त ऊसगांवके श्रावक ऊनकों भोजन जिमावे तो बतलाइये ! जिमानेवालेको पुन्य होगा या पाप ? अगर कहा जाय ईरादा स्वधर्मीकी भक्तिका था इसलिये भावहिंसा नही तो फिर इसीतरह इरादेपर बात रखीये, किसी जैनमुनिका इंतकाल होजाय और ऊनके शरीरका अग्निसंस्कार किया जाय ऊसमें पुन्य समजना या पाप ? कईजगह देखागया है ऊस जैनमुनिके मृतकलेवरके विमानकों जब श्मशानमें लेजाते है ऊसवख्त ऊस विमानके आगे रुपये पैसे ऊछालते हुवे मयजलसेके लेजाते है, और खुशबूदार चिजोंके साथ अग्निसंस्कार करते है. कहिये ! अग्निसंस्कार करनेवाले श्रावकोंकों पुन्य हुवा या पाप ? अगर कहा जाय ईरादा गुरुभक्तिका है इसलिये भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पाप नही तो यही बात दुसरे धर्मकार्यके लिये क्यौं न समजी जाय ? मृतकलेवर तो जड है, जड वस्तुकी भक्ति क्यौं करना ? कई श्रावक इसबातका अनुमोदन करते है कि अमुक

जैनमुनिके कलेवरका अग्निसंस्कार अछा किया गया. विमान अछा बना था. कहिये ! यह अनुमोदन पुन्यका सबब है या नही ?

प्रकरण संग्रहका थोकडा जोकि पंडितराज पूज्यश्री (७) देवजीस्वामीके शिष्य पूज्यश्री लाधाजीस्वामीके पास शुद्ध करवाके श्रावक भगवानदासजी केवलदासजी साकीन सुरतने गुजराती प्रिंटिंग प्रेस बंबईमें छपवाया है, ऊसके पृष्ट (११७)पर लिखा है, मेरुके चारबन है. १ भद्रशालबन, २ नंदनबन, ३ सौमनसबन, ४ पांडुकबन, भद्रशालबन मेरुके चौतर्फ जमीनपर है, वह पूर्वपश्चिम बाइस बाइसहजार योजन लंबा और ऊत्तरदखन अढाइसो अढाइसो योजन चौडा है, ऊसमैं एक पद्मवेदिका जोकि चौतर्फ एकबन-खंडसे घीरी हुई है. मेरुसे पूर्वकी तर्फ पचासयोजन बनमें जावे तो वहां एक सिद्धायतन है, वह पचास योजन लंबा, पचीसयोजन चौडा और छतीस योजन ऊंचा है, और ऊसमें अनेकथंभे लगे हुवे है. ऊस सिद्धायतनके तीनदरवजे पूरव दखन ऊत्तरमें बने हुवे है. वे दरवजे आठआठ योजनके ऊंचे और चारचार योजनके चौडे है. ऊस सिद्धायतनके बीचले विभागमें एक मणिमय पीठिका जोकि चार योजन लंबी चौडी और चार योजन महोटी रत्नमय बनी हुई है, ऊसपर एक देवछंदा आठ योजन लंबा चौडा और आठ योजनसे कुछ ज्यादह ऊंचा बना हुवा है, ऊसमे जिनप्रतिमा है, ऊसका बर्नन, देवछंदा, यावत्, धूपके कडछे वगेरा मौजूद है, इसीतरह चारो दिशामें चार सिद्धायतन जानना.

देखिये ! इसमे सिद्धायतन, देवछंदा और जिनप्रतिमाका बयान मौजूद है, जैनमजहबमें अगर जिनप्रतिमा मंजुर न होती तो ऐसा बयान क्यों होता ? इससे साबीत हुवा जिनप्रतिमा जैनधर्ममें कदीमसे मानी जाती है, जिनप्रतिमाकी पूजा करना श्रावकोका कर्तव्य है, ऐसा ऊपदेश जैनमुनि देतें है. जैनशास्त्रोमें जो बात

लिखी हो, ऊसका ऊपदेश करना जैनमुनिका फर्ज है. तीर्थंकरोके समवसरणमें सचित फुल बीछाये जाते थे. खुद तीर्थंकर महाराज रत्नसिंहासनपर बेठते थे, अपने ज्ञानसे वे जानते थे कि समवसरणमें बैठते वख्त फुलोंका स्पर्श जैनमुनियोकों होगा, फिर फुल बिछानेकी मनाइ तीर्थंकरोने क्यौं नही किई? अगर कहा जाय वे फुल अचित थे तो ऐसा पाठ किसी जैनआगमका कोई जाहिर करे.

अगर कोई इस सवालकों पेंश करे कि—जैनमुनिकों मुहपति हाथमें रखना किस जैनशास्त्रमें लिखा है.

(जवाब.) ओघनिर्युक्तिशास्त्रमें लिखा है कि मुहपति हाथमें रखना. मुखपर बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा, अगर कहा है तो कोई पाठ बतलावे, मुहपत्ति मुखपर बांधना वायुकायके जीवोकी हिफाजतके लिये नही होसकता. मुखमेसे निकलते हुवे भाषा वर्गणाके पुदगल चारस्पर्शी होते है और वायुकायके जीवोंका शरीर आठस्पर्शी होता है. चारस्पर्शी आठस्पर्शीकी घात नही करसकते. अगर कहा जाय भाषावर्गणाके पुदगल मुखसे बहार निकले बाद आठस्पर्शी होजायगे और फिर वायुकायके जीवोंकी घात करेगें, जवाबमें मालुम हो मुहपत्ति बांधनेसेभी भाषावर्गणाके पुदगल मुखसे बहार निकले बाद आठस्पर्शी होजायगें और वायुकायके जीवोकी हिंसा करेंगे तो फिर बतलाइये! मुहपत्ति मुखपर बांधनेसें क्या! फायदा हुवा? आचारांगसूत्रके दुसरे श्रुतस्कंधमें दुसरे अध्ययनके तीसरे ऊदेशेमें पाठ है कि—

से भिखुवा भिखुणीवा उसासमाणेवा निसासमाणेवा कासमाणेवा छीयमाणेवा जंभायमाणेवा उढवाएवा वायणिसग्गेवा करेमाणे पूव्वामेव आसयंवा पोसयंवा पाणिणा परिपेहित्ता ततो संजयामेव ओसासेज्जा जाव वायणिसग्गेवा करेज्जा.

स्वासोत्स्वास लेतेवख्त खांसी, आतेवख्त छींक, लेतेवख्त ऊबासी, लेतेवख्त और डकार लेतेवख्त जैनमुनि अपने मुखकों अपने हाथसे ढांके. खयाल किजिये! अगर मुहपत्ति मुखपर बांधनेका हुकम होता तो मुखको हाथसे ढांकनां क्यौं फरमाते? इसका कोई जवाब देवे.

अगर कोई तेहरीर करे कि जैनमुनिकों पीले कपडे रखना किस जैनशास्त्रमें कहा है, जवाबमें मालुम हो निशीथसूत्रके अठारहमें ऊदेशेमें लिखा है कि जैनमुनि नये कपडेकों तीनपसली जितना रंगदेवे, जिनकों शकहो वे महाशय ऊसशास्त्रकों देखे, और अपना शक रफाकरे, बत्तीससूत्रमें नंदीसूत्र सामील है, ऊसमें निशीथसूत्र मंजुर रखना फरमाया, इसलिये जैनमुनिकों कपडे रंगनेकी बातकों कौन जैन ईनकार करसकता है?

अगर कोई इस दलीलकों पेंश करे कि रात्रीकों पानी रखना जैनमुनिकों मुनासिब है? जवाबमें मालुम हो. बेशक! मुनासिब है, क्यौंकि रात्रीके वख्त फर्ज करो! किसी जैनमुनिकों मलोत्सर्ग करनेकी हाजत हुई तो बतलाइये! ऊस वख्त अशूचि दुर करनेके लिये पानीकी जरुरत होगी या नही? इसलिये चुना डालकर जैनमुनि रात्रीकों पानी रखे तो कोई हर्ज नही.

अगर कोई बयान करे कि जैनमुनिकों रात्रीके वख्त विहार करना किस जैनशास्त्रमें लिखा है? जवाबमें मालुम हो, रात्रीके वख्त विहार करना जैनमुनिकों मना है, मगर कोई कारण बनजाय तो औघनिर्युक्तिशास्त्रमें कहाभी है, रात्रीकों जैनमुनि विहार करे, ऊत्तराध्यनसूत्रमें बयान है कि एक चंडरुद्रनामके जैनाचार्य और ऊनके शिष्य कारणसे रात्रीको विहार करगये थे. पहले जमानेमें जैनमुनि बनखंडमें बागबगिचेमें या ऊद्यानमें रहते थे. आजकल गांवमें और फिर अछे अछे मकानमें रहते है, कहिये! यह रवाज

कबसे चला ? ऊत्तराध्ययनसूत्रमें जैनमुनिको तीसरे प्रहर गौचरी जाना कहा, आजकल पहले दुसरे प्रहरमें जानेका रवाज चलता है. यह रवाजभी कबसे जारी हुवा ? पहलेके जमानेमें जैनमुनि लुखासुका आहार लेते थे, अगर कोई पंचमहाव्रतधारी ऊत्कृष्ट संयमी पूर्ण क्रियापात्र बनना चाहे तो ऊद्यान या बनखंडमें रहे. और लुखासुका आहार लेवे, पहले जमानेमें कई जैनमुनि ऐसे थे जो राग होते हुवेभी औषध नही करवाते थे, अगर कहा जाय कि द्रव्यक्षेत्र कालभाव देखकर ऐसा बर्ताव करना पडता है तो इसी बातपर खयाल किजिये, महत्वता किस बातकी करना. जैसा द्रव्यक्षेत्रकालभाव है और जैसा सत्व संहनन और योग्यता है, मुताबिक ऊसके बर्ताव किया जाता है ऐसा कहना चाहिये.

[बत्तीससूत्रके नाम यहां बतलाये जाते है जोकि स्थानकवासी मजहबमें मंजुर रखे गये है.]

१ आचारांग.	१७ सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र.
२ सूत्रकृतांग.	१८ जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्र.
३ स्थानांग.	१९ निर्यावलीसूत्र.
४ समवायांग.	२० कल्पावतंसिकासूत्र.
५ भगवतीसूत्र.	२१ पुष्पिकासूत्र.
६ ज्ञातासूत्र.	२२ पुष्पचुलिकासूत्र.
७ ऊपाशक दशांगसूत्र.	२३ वन्हीदशांगसूत्र.
८ अंतकृतसूत्र.	२४ ऊत्तराध्ययनसूत्र.
९ अनुत्तरोववाइसूत्र	२५ दशवैकालिकसूत्र.
१० प्रश्नव्याकरणसूत्र.	२६ नंदीसूत्र.
११ विपाकसूत्र.	२७ अनुयोगद्वारसूत्र.
१२ ऊवाइसूत्र.	२८ निशीथसूत्र.

१३ रायपसेणीसूत्र.
१४ जीवाभिगमसूत्र.
१५ प्रज्ञापनासूत्र.
१६ चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र.
२९ दशाश्रुतस्कंधसूत्र.
३० वृहत्कल्पसूत्र.
३१ व्यवहारसूत्र.
३२ आवश्यकसूत्र.

ए बतीससूत्र स्थानकवासी मजहबके लोग मानते है, इनमें जो छविशमें नंबरपर नंदीसूत्र कहा है, ऊसमे पेतालिस आगम वगेरा चौदह हजार प्रकीर्णकशास्त्र मानना लिखे, ऊनको नही मानना इसकी क्या वजह है? स्थानकवासी मजहबके लोग कहा करते है, हम तीर्थंकर गणधरोके वचनको मंजूर रखते है. बतलावे! फिर प्रज्ञापनासूत्र और दशवैकालिकसूत्र जो ऊपर बतीससूत्रोकी गिनतीमें (१५) और (२५)में नंबरपर गिनाये गये है, तीर्थंकर गणधरोके बनाये हुवे नही, आचार्योंके बनाये हुवे है, इनकों क्यौं मंजुर रखे गये. मुनि कुंदनमलजी इसका जवाब देवे, अगर कहा जाय नंदीसूत्रमें इनके नाम दर्ज है, इसलिये मंजुर रखे है, तो दुसरे सूत्रोंके नामभी नंदीसूत्रमें दर्ज है, ऊनको क्यौं नही मानते? तीर्थंकर महावीरस्वामीके बाद (९८०) वर्सके पीछे जब देवर्द्धि-गणिक्षमाश्रमण जैनाचार्यने सब जैनाचार्योंकी सलाहसे जैनपुस्तक ताडपत्रपर लिखे, तब दशवैकालिक और प्रज्ञापनासूत्रके नाम दर्ज किये है.

मूर्त्तिपूजा धर्मी शख्शोकों एतकात बढानेवाली चीज है, जहां जिनमंदिर बने रहेंगें वहां तरक्की धर्मकी बनी रहेगी, जिनमंदिर बनवानेवाला श्रावक बारहमे देवलोककी गति हासिल करे, ऐसा महा निशीथसूत्रमें पाठ है, अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे कि बतीससूत्रकी गिनतीमें महा निशीथसूत्र नही गिना है, जवाबमें मालुम हो, बतीससूत्रकी गिनतीमें नंदीसूत्र माना गया है, और ऊस नंदीसूत्रमें महा निशीथसूत्रका नाम दर्ज है, इससे साबीत हुवा

महानिशीथसूत्र काबिल मंजुर करनेके है. बत्तीससूत्रही मानना और दुसरे नही मानना यह किसी जैनागममें नही लिखा, स्थानकवासी मजहबके श्रावकलोग अपने धर्मगुरुवोकों वंदना करने आनेवाले श्रावकोकों रसोई जिमावे और स्वधर्मी जानकर भक्ति करे तो बतलाइये ! पुन्य होगा या पाप ? अगर कहा जाय पुन्य होगा, तो फिर स्वधर्मीवात्सल्य करनेमें पुन्य क्यौं नही ? अगर कहा जाय दया सुखकी वेलडी है, और हिंसा दुखकी वेलडी है, तो जवाबमें मालुम हो, जैनमुनि विहार करते वख्त जब नदी ऊतरेगे और ऊनके पांवोसें जो पानीके जीव मरेगें यह दयामें समजना या हिंसामे ? अगर कहा जाय ! नदी ऊतरना ईरादे धर्मके तीर्थंकरोका हुकम है, तो फिर जिनमंदिर बनाना तीर्थयात्रा जाना यह ईरादे धर्मके हुकम नही है क्या ? देखिये ! ईरादेकी सडक कैसी मजबूत है कि–विना इसके काम नही चलता, जैनमुनि जब आहार लेनेकों गृहस्थोके घर जायगें तो ऊनके शरीरसे जो वायुकाय वगेरा जीवोकी हिंसा होगी, यह दयामें समजना या किसमे ? दीक्षाके जलसेमें बाजे बजवाना, जुलुस निकालना यह दयामे समजना या किसमे ? स्थानक बनानेमे पृथवी, पानी और अग्निकायके जीवोंकी हिंसा होगी यह दयामें समजना या किसमे ? इसका कोई महाशय जवाब देवे. दरअसल ! जहां इरादा शुभ है वहां भावहिंसा नही, और विना भावहिंसाके पाप नही, यह सिधी सडक है.

अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे कि–पथरकी गौ जैसे दुध नही देती, वैसे पथरकी मूर्त्ति मुक्ति कैसे देयगी ?

(जवाब.) जैसे कागज स्याहीके बने हुवे जडपुस्तक बोलते नही तो मुक्ति कैसे देयगे ? अगर कहा जाय पुस्तकके बांचनेसे ज्ञान होगा तो जवाबमें मालुम हो, इसीतरह मूर्त्तिके दर्शन करनेसे

भी ज्ञान होगा, जैसे जंबूद्वीपका नकशा देखकर जंबूद्वीपका ज्ञान होता है, जिनेंद्रकी मूर्त्ति देखनेसे जिनेंद्रोके गुणोका ज्ञान होगा, ज्ञातासूत्रमें बयान है कि–मल्लिनाथजीकी मूर्त्ति देखकर छह राजाओको जातिस्मर्ण ज्ञान हुवा, जैसे किसी शख्शकी मूर्त्ति देखकर वो याद आजाता है, जिनेंद्रोकी मूर्त्ति देखकर जिनेंद्रदेव क्यौं न याद आयगें? कई शहरोमें राजेमहाराजोकी मूर्त्ति बतौर यादद्दास्तीके खडी किई जाती है, हुंडी एकतरहकी स्थापना है, और ऊससे रुपये मीलसकते है, देखिये! स्थापना कितनी आलादर्जेकी चीज है, इस बातपर गौर करो.

रजोहरण–मुखवस्त्रिका जैनमुनिका वेश है, ऊनकों धारण करनेवाले जब दिखाई दिये कि–तुर्त दुसरोके दिलमें मुनि याद आजाते है, इसी तरह जिनेंद्रोकी मूर्त्ति देखकर जिनेंद्र याद आजाते है, अगर कोई कहे सिंहकी मूर्त्ति किसीकों मारती नही, वैसे जिनेंद्रकी मूर्त्ति किसीकों तारती नही, जवाबमें मालुम हो, सिंहकी मूर्त्ति देखनेसे जैसे सिंह याद आजाता है, और दिलमें एक तरहका खोफ भी दरपेश होजाता है, वैसे जिनेंद्रकी मूर्त्ति देखनेसे जिनेंद्र याद आजाते है, और दिलमें वैराग्य भावना पैदा होजाती है, सबुत हुवा मूर्त्ति ऊस चीजकी यादी दिलानेमें एक फायदेमंद चीज है, नरकके जीवोके और स्वर्गके जीवोके चित्र देखकर आदमी ताज्जुब करने लगता है, देखिये! चित्रोंने कितना असर पहुचाया, जिसके देखनेसे स्वर्ग–नरक याद आगये, चित्रभी एक तरहकी स्थापना है. सोचो! स्थापनामें कितनी बडी ताकात रही है, गेरमुल्कसें आई हुई चीठीके बांचनेसें घर बेठे सबहाल मालुम होसकते है, कहिये! हर्फोंमें कितनी ताकात रही हुई है? ऊसपर खयाल किजिये! दरअसल! हर्फ ज्ञानकी स्थापना है, और वो स्थापना पुरा काम देती है.

जैनरामायणमें बयान है कि-रामचंद्रजीकी भेजी हुई अंगुठीसे सीताजीकों लंकामें खुशी पैदा हुई और सीताजीके भेजे हुवे कंकणसे किष्कंधामें बेठे हुवे रामचंद्रजीकोंभी खुशी हासिल हुई, समजसको तो समजलो! जडचीजने चेतनकों कितनी खुशी पैदा किई?

पांडवचरितमें बयान है,-एक भीलने द्रोणाचार्यजीकी मूर्त्ति बनाकर ऊस मूर्त्तिके सामने अदब किया, ऊस मूर्त्तिकों गुरूसमान मानी और ऊससे धनुर्विद्याका ईल्म हासिल किया? देखलो! बदौलत ऊस मूर्त्तिके ऊस भीलकों कितना फायदा हुवा?

अगर कोई इस मजमूनकों पेंश करे कि-निराकार परमात्माकी साकार मूर्त्ति कैसे बनाते हो? जवाबमें मालुम हो, निराकारकी मूर्त्ति नही बनाई जाती, साकारकी मूर्त्ति बनाई जाती है. तीर्थंकरदेव जब देहधारी थे ऊस हालतकी मूर्त्ति बनाई जाती है, निराकार हालतकी नही बनाई जाती, जिसने कागज स्याहीके बने हुवे धर्मपुस्तक माने ऊसने मूर्त्ति एकदफे नही हजारदफे मानी समजो, कोई पुस्तकको मानते है, कोई किसी पहाडको, कोई चरनको और कोई मंदिरमूर्त्तिकों मानते है, देखलो! विना स्थापनाके किसीका काम नही चला, सबुत हुवा नाम स्थापना, द्रव्य और भाव ये चारो निक्षेपे काबिल माननेके है, गुरुके आसनपर अगर अपना पांव लगजाय तो कहते हो, बेअदबी हुई, कहिये! आसन एक जडवस्तु थी, जडकी बेअदबीसे गुरुकी बेंअदबी कैसे हुई? अगर कहाजाय जडमें चेतनकी स्थापना मानी गई है तो फिर मूर्त्तिमेंभी परमात्माकी स्थापना मानी गई है ऐसा कहना कौन बेंइन्साफ हुवा? जब तीर्थंकरोका जन्म होता है इंद्रदेवते मीलकर ऊनका जन्म ऊत्सव करते है, खयाल करो! ऊस वख्त वे भावतीर्थंकर तो हुवे नही थे. द्रव्यतीर्थंकरका ऊत्सव ऊनोने किया या नही? अगर द्रव्यतीर्थंकरका ऊत्सव करना बेंफायदे

था तो इंद्रदेवते ऐसा क्यौं करते ? अगर कोई कहे हम तीर्थंकरदेवका ध्यान मनमेंही करलेयगें हमको मूर्त्ति माननेसे कोई जरूरत नही.

(जवाब.) फिर गुरुमहाराजका ध्यानभी मनमेंही करलिया करो, गुरुमहाराजके दर्शनोकों एक गांवसे दुसरेगांव जाना क्या ! फायदा ? गाडीघोडेपर सवार होना, रास्तेमें खानेपीनेका आरंभ करना, क्या जरुरत ? घरबेठेही गुरुका ध्यान करलेना अछा है, गुरुके दर्शनोकों जाना और तीर्थंकरोके दर्शनोकों नही जाना कौन ईन्साफ है ?

अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे कि–तीर्थंकरदेव त्यागी होते थे, ऊनकी मूर्त्तिको गेहने पहनाना क्या जरुरत ?

(जवाब.) तीर्थंकरदेव खुद जब समवसरणमें रत्नसिंहासनपर बिराजमान होते थे, दोनों तर्फ देवते चवर करते थे, ऊनके पीछे भामंडल रखा जाता था, विहार करते वख्त देवताओंके बनाये हुवे सुवर्णके कमलोपर पांव देकर चलते थे, इन बातोसे ऊनका त्यागीपना नही गया था, तो ऊनकी मूर्त्तिकों गहने पहनानेसें त्यागीपना कैसे चला जायगा ? स्थानांगसूत्रमें बयान है कि–१ सावद्यव्यापार और सावद्यपरिणाम, २ सावद्यव्यापार और निरवद्यपरिणाम, ३ निरवद्यव्यापार और सावद्यपरिणाम, ४ निरवद्य व्यापार और निरवद्यपरिणाम, इन चार भेदोमें पहलाभेद अधर्मी-मिथ्यादृष्टिकी अपेक्षासे कहा गया है, ऐसा जानना, क्यौंकि अधर्मीके मनपरिणाम पापमय और कर्तव्यभी पापमय होते है. दुसरा भेद सावद्यव्यापार और निरवद्यपरिणाम यह श्रद्धावान् श्रावककी अपेक्षासे कहा गया है, ऐसा जानना. देवपूजा, गुरुवंदन वगेरा धार्मिक कामोमें सावद्यव्यापार दिखाई देता है, मगर मनःपरिणाम

पापमय नही, इसलिये पाप नही. बल्कि ! पुन्यानुबंधिपुन्य और अशुभ अनिकाचितकर्मकी निर्जराका हेतु है, तिसरा भेद निरवद्य व्यापार और सावद्यपरिणाम यह प्रसन्नचंद्र राजरिषिकी अपेक्षासे जानना, प्रसन्नचंद्रजी राजरिषि काजोत्सर्गध्यानमे खडे थे, ऊनका व्यापार ऊसवख्त निरवद्य था, मगर मनःपरिणाम हिंसात्मक होनेसे ऊनकों अशुभ कर्मके दलिये संचय होगये थे, चौथा भेद निरवद्यव्यापार और निरवद्यपरिणाम यह भेद सर्व विरतिसाधुकी अपेक्षासे जानना, क्यौं सर्वविरति साधुमहाराजका व्यापार (यानी) कर्तव्यभी निरवद्य और मनःपरिणामभी निरवद्य होते है, इन चारो भेदोको अछीतरह समज लिये जाय तो सब तरहके शक रफा हो सकेंगें.

दरअसल ! मनके शुभाशुभ परिणाम पुन्यपापके हेतु है, देखलो ! एलाचिकुमार एक नटिनीपर मोहित होकर अपने घरसे निकला था, और चाहताथा कि–किसी तरह इस नटिनीकों अपनी औरत बनालुं. मगर एकदफे जब एकशहरमें बांसपर चढकर नाटक करता था, एक जैनमुनिकों भिक्षावृत्ति करते देखे और मनःपरिणाम सुधरे, फौरन ! ऊनकों केवलज्ञान पैदा होगया. देखलो ! निरवद्य मनःपरिणामके सामने सावद्यव्यापार यानी हिंसात्मक कर्तव्यभी रद होगया इसी लिये कहाजाता है, मनःपरिणाम यानी इरादा बडी चीज है, तीर्थोंकी जियारत जानेसे जीवके इरादे पाक और साफ होते है, धर्मपर एतकात बढता है और दुनियाके कारोबार भूलजाते है, अगर तीर्थोंमें कोई जैनमुनि पधारे हुवे हो तो शास्त्र सुननेकाभी फायदा मीलता है, जोजो तीर्थंकर और मुनिमहाराज ऊस तीर्थसे मुक्ति पाये है वे याद आयगें. पुन्यवान् पुरुषोके निर्मल पुदगल परमाणुओका स्पर्श होनेसे बुद्धि निर्मल होगी. तीर्थोंमें फिरनेसे भवभ्रमण कम होगा. तीर्थभूमिकी रज

अपने शरीरपर लगनेसें पापरुपीरज दुर होगी, इन इन सबबोसे तीर्थोंकी जियारत और मूर्त्तिपूजा फायदेमंद चीज साबीत होती है.

अगर कोई इस दलिलकों पेश करे कि–तीर्थोंमें गये और मनःपरिणाम नही सुधरे तो क्या फायदा हुवा ?

(जबाब.) गुरुमहाराजको वंदना करने गये और मनःपरिणाम नही सुधरे तो बतलाइये! क्या! फायदा हुवा? दरअसल! देवगुरुधर्मकी जगह मनःपरिणाम सुधरनेका स्थान है, इतनेपरभी किसीके मनःपरिणाम नही सुधरे तो ऊस जीवके कर्मोका दोष है, यूंतो दीक्षा लेनेपरभी किसीके मनःपरिणाम नही सुधरे तो इसमे कोई क्या करे, उस जीवके पापकर्मका ऊदय जानना, तीर्थंकरदेवकी वानी सुनकर अभव्यजीवके मनःपरिणाम नही सुधरे तो इसमें तीर्थंकरकी वानीका क्या दोष? ऊस जीवके अशुभकर्मका दोष है, ऐसा जानना.

किताब–हिदायत बुतपरस्तिये जैनका लिखान खतम होता है, मुनि कुंदनमलजीके विवेचनपत्रका जवाबभी इसमें देदिया है, आपलोग पढे, और अपने दोस्तोकोंभी दिखलावे, में ऊमेद करता हुं–सबकों यह किताब पसंद होगी और मूर्त्तिपूजाकी संबुतीपर ऊमदा दलिले मीलेगी.

☛ ब कलम–जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी,

मुकाम–पाचोरा–खानदेश.

[सिद्धचक्रके महात्मपर उमदा लावनी.]

जग्तमें नवपद जयकारी–पूजतां रोग टले भारी,
प्रथमपद तीरथपति राजे–दोप अष्टादशको त्यागे,
आठ प्रातिहारज छाजे–जग्तप्रभु गुण बारे राजे,
अष्ट कर्मदल जीतके–सकल रिद्धि थई आय,
सिद्ध अनंत नमुं बीजेपद एक समय शिव जाय,
प्रगट भयो निजस्वरूप भारी–जग्तमें नवपद जयकारी. १

सूरिपदमें गोयम केशी–ओपमा चंद सूरज जैसी,
ऊधार्यो राजा परदेशी–एक भवमांही शिव लेसी,
चोथेपद पाठक नमुं–श्रुतधारी ऊवझाय,
सर्वसाधु पंचमपदमांही–धन धन्नो अणगार,
वखाण्यो वीरप्रभु भारी–जग्तमें नवपद जयकारी. २

द्रव्य खटकी सरधा आवे–समसंवेगादिक पावे,
विना ये ज्ञान नही किरिया–ज्ञानदर्शनथी सब तरिया,
ज्ञानपदारथ सातमें–पदमें आतमराम,
रमता रहे अध्यातममांही–निजपद साधे काम,
देखता वस्तु जगतसारी–पूजतां रोग टले भारी. ३

योगनी महिमा बहु जानी–चक्रधर छोडी सब नारी,
यति दशधर्म करी सोहे–मुनि श्रावक सब मन मोहे,
कर्म निकाचित काटवा–तपकुठार करधार,
नवमापद जो करे क्षमासु–कर्म मूलकट जाय,
भजो नवपद जगसुखकारी–जग्तमें नवपद जयकारी. ४

श्री सिद्धचक्र भजो भाइ–आचामल तप नव दिनठाई,
पाप तिहु योगे परीहरज्यो–भवी श्रीपालपरे तरज्यो,
ओगणीसें सतरांसगे–जयपुर श्रीसुपास,
चैत्रधवल पुनमदिने–मुज सफल हुई सब आस,
बाल कहे नवपद छब प्यारीं–जग्तमें नवपद जयकारी. ५
(इति नवपद महात्मपर लावनी संपूर्ण.)

[जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजीके बनाये हुवे ग्रंथोकी यादी.]

१–मानवधर्मसंहिता. २–रिसाला मजहब ढुंढिये.
३–जैनसंस्कारविधि. ४–बयान पारसनाथ पहाड.

ये चार ग्रंथ जितने छपे थे तमाम बीक गये, सीलक नही रहे.

१–जैनतीर्थगाइड–किंमत तीन रूपये.
२–त्रिस्तुति परामर्श–आठ आने.
३–सनम परस्तिये जैन–किंमत चार आने.
४–न्यायरत्नदर्पण–मुफत.

[अलावा इसके और ग्रंथ छपवाना बाकी है, ऊनके नाम नीचे मुजब.]

१–जैनतीर्थगाइड छोटी. २–पंचमकाल पताका.
३–खरतरगछ मीमांसा. ४–जहुरे आलम.
५–प्राचीन श्वेतांबर. ६–निर्णय प्रभाकर.

कोई श्रावक इन ग्रंथोकों अपने नाम और अपने खर्चसे छपवाना चाहे–ग्रंथकर्त्तासे बजरीये पत्रके दरयाफ्त करे.